

एकादशः पाठः

## पर्यावरणम्

प्रस्तुत पाठ्यांश पर्यावरण को ध्यान में रखकर लिखा गया एक लघु निबन्ध है। वर्तमान युग में प्रदूषित वातावरण मानव-जीवन के लिए भयङ्कर अभिशाप बन गया है। नदियों का जल कलुषित हो रहा है, वन वृक्षों से रहित हो रहे हैं, मिट्टी का कटाव बढ़ने से बाढ़ की समस्याएँ बढ़ती जा रही हैं। कल-कारखानों और वाहनों के धुँ से वायु विषैली हो रही है। वन्य-प्राणियों की जातियाँ भी नष्ट हो रही हैं। वैज्ञानिकों के अनुसार वृक्षों एवं वनस्पतियों के अभाव में मनुष्यों के लिए जीवित रहना असम्भव प्रतीत होता है। पत्र, पुष्प, फल, काष्ठ, छाया एवं औषधि प्रदान करने वाले पादपों एवं वृक्षों की उपयोगिता वर्तमान समय में पूर्वापेक्षया अधिक है। ऐसी परिस्थिति में हमारा कर्तव्य है कि हम पर्यावरण के संरक्षणार्थ उपाय करें। वृक्षों के रोपण, नदी-जल की स्वच्छता, ऊर्जा के संरक्षण, वापी, कूप, तड़ाग, उद्यान आदि के निर्माण और उनको स्वच्छ रखने में प्रयत्नशील हों ताकि जीवन सुखमय एवं उपद्रव रहित हो सके।

प्रकृतिः समेषां प्राणिनां संरक्षणाय यतते। इयं सर्वान् पुष्णाति विविधैः प्रकारैः, तर्पयति च सुखसाधनैः। पृथिवी, जलं, तेजो, वायुः, आकाशश्चास्याः प्रमुखानि तत्त्वानि। तान्येव मिलित्वा पृथक्तया वाऽस्माकं पर्यावरणं रचयन्ति। आव्रियते परितः समन्तात् लोकोऽनेनेति पर्यावरणम्। यथाऽजातशिशुः मातृगर्भे सुरक्षितस्तिष्ठति तथैव मानवः पर्यावरणकुक्षौ। परिष्कृतं प्रदूषणरहितं च पर्यावरणमस्मभ्यं सांसारिकं जीवनसुखं, सद्विचारं, सत्यसङ्कल्पं माङ्गलिकसामग्रीञ्च प्रददाति। प्रकृतिकोपैः आतङ्कितो जनः किं कर्तुं प्रभवति? जलप्लावनैः, अग्निभयैः, भूकम्पैः, वात्याचक्रैः, उल्कापातादिभिश्च सन्तप्तस्य मानवस्य क्व मङ्गलम्?

अतएव प्रकृतिरस्माभिः रक्षणीया। तेन च पर्यावरणं रक्षितं भविष्यति। प्राचीनकाले लोकमङ्गलाशांसिन् ऋषयो वने निवसन्ति स्म। यतो हि वने एव सुरक्षितं पर्यावरणमुपलभ्यते स्म। विविधा विहगाः कलकूजितैस्तत्र श्रोत्ररसायनं ददति।

सरितो गिरिनिर्झराश्च अमृतस्वादु निर्मलं जलं प्रयच्छन्ति। वृक्षा लताश्च फलानि पुष्पाणि इन्धनकाष्ठानि च बाहुल्येन समुपहरन्ति। शीतलमन्दसुगन्धवनपवना औषधकल्पं प्राणवायुं वितरन्ति।



परन्तु स्वार्थान्धो मानवस्तदेव पर्यावरणमद्य नाशयति। स्वल्पलाभाय जना बहुमूल्यानि वस्तूनि नाशयन्ति। यन्त्रागाराणां विषाक्तं जलं नद्यां निपात्यते येन मत्स्यादीनां जलचराणां च क्षणेनैव नाशो जायते। नदीजलमपि तत्सर्वथाऽपेयं जायते। वनवृक्षा निर्विवेकं छिद्यन्ते व्यापारवर्धनाय, येन अवृष्टिः प्रवर्धते, वनपशवश्च शरणरहिता ग्रामेषु उपद्रवं विदधति। शुद्धवायुरपि वृक्षकर्तनात् सङ्कटापन्नो जातः। एवं हि स्वार्थान्धमानवैर्विकृतिमुपगता प्रकृतिरेव तेषां विनाशकर्त्री सञ्जाता। पर्यावरणे विकृतिमुपगते जायन्ते विविधा रोगा भीषणसमस्याश्च। तत्सर्वमिदानीं चिन्तनीयं प्रतिभाति।

धर्मो रक्षति रक्षितः इत्यार्षवचनम्। पर्यावरणरक्षणमपि धर्मस्यैवाङ्गमिति ऋषयः प्रतिपादितवन्तः। तत एव वापीकूपतडागादिनिर्माणं देवायतनविश्रामगृहादिस्थापनञ्च

धर्मसिद्धेः स्रोतोरूपेणाङ्गीकृतम्। कुक्कुरसूकरसर्पनकुलादिस्थलचरा, मत्स्यकच्छपमकरप्रभृतयो जलचराश्चापि रक्षणीयाः, यतस्ते स्थलमलापनोदिनो जलमलापहारिणश्च। प्रकृतिरक्षयैव सम्भवति लोकरक्षेति न संशयः।

### शब्दार्थः

|                 |                      |                                 |
|-----------------|----------------------|---------------------------------|
| पुष्पाति        | पोषणं करोति          | पुष्ट करता है                   |
| अजातः शिशुः     | अनुत्पन्नजातकः       | अजन्मा शिशु                     |
| कुक्षौ          | गर्भे                | गर्भ में                        |
| जलप्लावनैः      | जलौघैः               | बाढ़ से                         |
| वात्याचक्रैः    | वातचक्रैः            | आँधी, बवंडर                     |
| लोकमङ्गलाशंसिनः | समाजकल्याणकामाः      | जनता के कल्याण को चाहने वाले    |
| श्रोत्ररसायनम्  | कर्णामृतम्           | कान को अच्छा लगने वाला          |
| गिरिनिर्झराः    | पर्वतानां प्रपाताः   | पहाड़ों से निकलने वाले झरने     |
| यन्त्रागाराणाम् | यन्त्रालयानाम्       | कारखानों के                     |
| अपेयम्          | पातुम् अयोग्यम्      | न पीने योग्य                    |
| वृक्षकर्तनात्   | वृक्षाणाम् उच्छेदात् | पेड़ों के काटने से              |
| देवायतनम्       | देवालयः, मन्दिरम्    | मन्दिर                          |
| स्थलमलापनोदिनः  | भूमिमलापसारिणः       | भूमि की गन्दगी को दूर करने वाले |

### अभ्यासः

#### 1. अधोलिखितानां प्रश्नानामुत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत-

- प्रकृतेः प्रमुखतत्त्वानि कानि सन्ति?
- स्वार्थान्धः मानवः किं करोति?
- पर्यावरणे विकृते जाते किं भवति?
- अस्माभिः पर्यावरणस्य रक्षा कथं करणीया?
- लोकरक्षा कथं संभवति?
- परिष्कृतं पर्यावरणम् अस्मभ्यं किं किं ददाति?

## 2. स्थूलपदान्यधिकृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-

- (क) वनवृक्षाः निर्विवेकं छिद्यन्ते।  
 (ख) वृक्षकर्तृनात् शुद्धवायुः न प्राप्यते।  
 (ग) प्रकृतिः जीवनसुखं प्रददाति।  
 (घ) अजातशिशुः मातृगर्भे सुरक्षितः तिष्ठति।  
 (ङ) पर्यावरणरक्षणं धर्मस्य अङ्गम् अस्ति।

## 3. उदाहरणमनुसृत्य पदरचनां कुरुत-

- (क) यथा- जले चरन्ति इति - जलचराः  
 स्थले चरन्ति इति - .....  
 निशायां चरन्ति इति - .....  
 व्योम्नि चरन्ति इति - .....  
 गिरौ चरन्ति इति - .....  
 भूमौ चरन्ति इति - .....  
 (ख) यथा- न पेयम् इति - अपेयम्  
 न वृष्टि इति - .....  
 न सुखम् इति - .....  
 न भावः इति - .....  
 न पूर्णः इति - .....

## 4. उदाहरणमनुसृत्य पदनिर्माणं कुरुत-

- यथा-वि + कृ + क्तिन् = विकृतिः  
 (क) प्र + गम् + क्तिन् = .....  
 (ख) दृश् + क्तिन् = .....  
 (ग) गम् + क्तिन् = .....  
 (घ) मन् + क्तिन् = .....  
 (ङ) शम् + क्तिन् = .....  
 (च) भी + क्तिन् = .....  
 (छ) जन् + क्तिन् = .....  
 (ज) भज् + क्तिन् = .....  
 (झ) नी + क्तिन् = .....

5. निर्देशानुसारं परिवर्तयत-

यथा-स्वार्थान्धो मानवः अद्य पर्यावरणं नाशयति (बहुवचने)।

स्वार्थान्धाः मानवाः अद्य पर्यावरणं नाशयन्ति।

- (क) सन्तप्तस्य मानवस्य मङ्गलं कुतः? (बहुवचने)  
 (ख) मानवाः पर्यावरणकुक्षौ सुरक्षिताः भवन्ति। (एकवचने)  
 (ग) वनवृक्षाः निर्विवेकं छिद्यन्ते। (एकवचने)  
 (घ) गिरिनिर्झराः निर्मलं जलं प्रयच्छन्ति। (द्विवचने)  
 (ङ) सरित् निर्मलं जलं प्रयच्छति। (बहुवचने)

6. पर्यावरणरक्षणाय भवन्तः किं करिष्यन्ति इति विषये पञ्च वाक्यानि लिखत।

यथा- अहं विषाक्तम् अवकरं नदीषु न पातयिष्यामि।

- (क) .....  
 (ख) .....  
 (ग) .....  
 (घ) .....  
 (ङ) .....

7. (क) उदाहरणमनुसृत्य उपसर्गान् पृथक्कृत्वा लिखत-

| यथा- संरक्षणाय   | - | सम्   |
|------------------|---|-------|
| (i) प्रभवति      | - | ..... |
| (ii) उपलभ्यते    | - | ..... |
| (iii) निवसन्ति   | - | ..... |
| (iv) समुपहरन्ति  | - | ..... |
| (v) वितरन्ति     | - | ..... |
| (vi) प्रयच्छन्ति | - | ..... |
| (vii) उपगता      | - | ..... |
| (viii) प्रतिभाति | - | ..... |

(ख) उदाहरणमनुसृत्य अधोलिखितानां समस्तपदानां विग्रहं लिखत-

|                |   |                   |
|----------------|---|-------------------|
| यथा- तेजोवायुः | - | तेजः वायुः च।     |
| गिरिनिर्झराः   | - | गिरयः निर्झराः च। |
| (i) पत्रपुष्पे | - | .....             |
| (ii) लतावृक्षौ | - | .....             |
| (iii) पशुपक्षी | - | .....             |
| (iv) कीटपतङ्गौ | - | .....             |

### परियोजनाकार्यम्

- (क) विद्यालयप्राङ्गणे स्थितस्य उद्यानस्य वृक्षाः पादपाश्च कथं सुरक्षिताः स्युः तदर्थं प्रयत्नः करणीयः इति सप्तवाक्येषु लिखत।
- (ख) अभिभावकस्य शिक्षकस्य वा सहयोगेन एकस्य वृक्षस्य आरोपणं करणीयम्। (यदि स्थानम् अस्ति।) तर्हि विद्यालय-प्राङ्गणे, नास्ति चेत् स्वस्मिन् प्रतिवेशे, गृहे वा।) कृतं सर्वं दैनन्दिन्यां लिखित्वा शिक्षकं दर्शयत।



(क) च्वि प्रत्यय का प्रयोग -

अभूततद्भावे च्वि - जो वस्तु पहले न हो उसके हो जाने में च्वि प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है। च्वि प्रत्यय का प्रयोग केवल भू तथा कृ धातुओं के साथ होता है। शब्द के अन्तिम स्वर का 'ई' हो जाता है।

|                 |   |                                                           |
|-----------------|---|-----------------------------------------------------------|
| यथा- अङ्गीकृतम् | - | अनङ्गस्य (अस्वीकृतस्य) अङ्गं कृतम् अङ्गीकृतम् (स्वीकृतम्) |
| कृष्णीक्रियते   | - | अकृष्णस्य कृष्णः क्रियते                                  |
| ब्रह्मीभवति     | - | अब्रह्मणः ब्रह्म भवति                                     |
| द्रवीक्रियते    | - | अद्रवस्य द्रवः क्रियते                                    |

(ख) निम्नलिखित शब्दयुग्मों के भेद देखने योग्य हैं-

|          |   |             |
|----------|---|-------------|
| सङ्कल्पः | - | सत्सङ्कल्पः |
| आचारः    | - | सदाचारः     |
| जनः      | - | सज्जनः      |
| सङ्गतिः  | - | सत्सङ्गतिः  |
| मतिः     | - | सन्मतिः     |

- (ग) आर्षवचन - ऋषि के द्वारा कहा गया वचन 'आर्षवचन' कहलाता है।  
 (घ) पञ्चतत्त्व - पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश। इन पाँच तत्त्वों से ही यह शरीर बनता है।

### समानान्तर श्लोक व सूक्तियाँ

पर्यावरण से सम्बन्धित निम्न उक्तियाँ एवं श्लोक पढ़ने योग्य तथा याद करने योग्य हैं-

- हमारी संस्कृति में वृक्ष वन्दनीय हैं इसलिए वृक्षों को काटना, उखाड़ना वर्जित है।  
 दशकूपसमा वापी दशवापीसमो हृदः।  
 दशहृदसमः पुत्रो दशपुत्रसमो द्रुमः॥ (मत्स्यपुराणम्)
- तुलसी का पौधा भारतीय संस्कृति का एक महत्वपूर्ण अङ्ग है। न केवल धार्मिक अपितु चिकित्सा की दृष्टि से भी यह रक्षा करने योग्य है। इसीलिए घर के आँगन में इसके रोपण का महत्व है। पुराण और वैद्यक ग्रन्थों के अनुसार तुलसी का पौधा वायुप्रदूषण को दूर करता है। कहा गया है-  
 'तुलसी' कानने चैव गृहे यस्यावतिष्ठते।  
 तद्गृहं तीर्थमित्याहुः नायान्ति यमकिङ्कराः॥  
 तुलसीगन्धमादाय यत्र गच्छति मारुतः।  
 दिशो दश पुनात्याशु भूतग्रामाश्चतुर्विधान्॥ (पद्मोत्तरखण्डम्)
- तुलसी का रस तीव्रज्वर को नष्ट करता है। कहा गया है-  
 पीतो मरीचिचूर्णेन तुलसीपत्रजो रसः।  
 द्रोणपुष्परसोप्येवं निहन्ति विषमं ज्वरम्॥ (शाङ्गधर)
- वृक्षारोपण का महत्व-  
 तारयेद् वृक्षरोपी तु तस्माद् वृक्षान् प्ररोपयेत्।  
 तस्य पुत्रा भवन्त्येव पादपा नात्र शंसयः॥